अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारतीय संस्कृति और साहित्य में परिवर्तन

श र्मला देवी
शोधार्थी, हिन्दी वभाग, पंजाब वश्व वद्यालय, चंडीगढ़।
अ सस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी वभाग, एस॰डी॰ कॉलेज, चंडीगढ़।

पाश्चात्य साहित्य का भारतीय साहित्य पर बड़ा ही प्रभाव रहा है। पश्चिमी साहित्य की रोमांचवाद, अस्तित्ववाद , मनो वश्लेषण आदि प्रवृत्तियों का स्पष्ट प्रभाव भारतीय साहित्य में उपन्यासों कहानियों तथा नाटकों में दिखाई पड़ता है। काव्य में पश्चिम का प्रभाव अतुकांत और प्रगतिवादी क वताओं में देखा जा सकता है। पश्चिम के प्रभाव के कारण ही साहित्य में अनेक वचारधाराएं तथा दृष्टिकोण सामने आए। साहित्य में छोटी कहानियों, एकांकी और नाटकों का प्रचार हुआ । इसके अतिरिक्त साहित्य में धर्मनिरपेक्षता , नास्तिकता,भोगवाद , साम्यवाद प्रगतिवाद तथा स्वतंत्रता, समानता आदि प्रवृतियां पश्चिमी संस्कृति का ही प्रभाव है। जब साहित्यकार कोई रचना रचता है ,तब वह समाज को साहित्य से जोड़ता है। समाज के जुड़ने से तीज -त्यौहार, रीति- रिवाज ,परंपराएं आदि उसमें अपने -आप शा मल हो जाती हैं और वही हमारी संस्कृति है। " संस्कृति" शब्द संस्कार से बना हैं। गोल्डन वाइजर के अनुसार "संस्कृति के अंतर्गत हमारी धारणाएं, वश्वास एवं वचार ,हमारे निर्णय ,हमारे नैतिक मूल्य , हमारी संस्थाएं,राजनीतिक तथा वैधानिक, धा र्मक तथा आ र्थक ,हमारे वधान एवं शष्टाचार ,हमारी पुस्तकें और यंत्र, हमारा वज्ञान दर्शन और वह समस्त वस्तुएं तथा प्राणी, दोनों अपने- आप में एवं अनेका -अनेक अंतर - संबंधों के रुप में सम्मि लत हैं।"**1**

संस्कृति हमारे साहित्य का आवश्यक अंग है। संस्कृति कसी भी व्यक्ति का उसके परिवेश से परिचय करवाती है। प्राय: सभी देशों तथा राज्यों की अलग-अलग संस्कृति होती है। भारत में व वधता के कारण अनेक संस्कृतियां पाई जाती हैं। साहित्यकार जिस परिवेश से जुड़ा होता है, वहां की संस्कृति का

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

प्रभाव उसके साहित्य में अवश्य दिखाई देता है। वदेशों में जो भी प्रवासी लेखक साहित्य लखते हैं, उनके साहित्य में हमारे देश की संस्कृति की झलक अवश्य मलती है।

राष्ट्र की जीवंतता का बोध उसकी संस्कृति से ही प्राप्त होता है। भारतीय नागरिक अपनी संस्कृति की प्राचीनता और गौरव -गरिमा से मं डत रहे हैं ,परंतु वर्तमान साहित्य पर पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। भारतीय साहित्य में पाश्चात्य संस्कृति के प्रति अनुराग , वदेशी वस्तुओं का लोभ , पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण ,सांस्कृतिक आयात - निर्यात ,वर्णसंकर संस्कृति का उदय, सांस्कृतिक दरिद्रय,नव्य वचार- चंतन , दुख- परोपकार ,संस्कृति के बचाव के नाम पर लूट -खसोट एवं कलाकारों की दयनीय स्थिति आदि व भन्न पक्षों को उजागर कया जा रहा है।

इस वषय में अ धक वस्तार से वर्णन करने की अपेक्षा इतना कह देना पर्याप्त होगा, क पश्चिमी साहित्य की प्रत्येक प्रवृत्ति का अनुकरण भारतीय साहित्य में हो रहा है। हिंदी का साहित्य पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से ओतप्रोत हो रहा है। वर्तमान में हिंदी भाषा में अ धकतर अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग कया जा रहा हैं। जिससे शुद्ध हिंदी की जगह "हिंग्लिश" का प्रभाव हमारे चारों ओर दिखाई दे रहा है। यह पाश्चात्य प्रभाव का असर ही है। भारतीय रीति-रिवाजों के साथ ही भारतीय संस्कृति के अन्य अंगों पर भी पाश्चात्य संस्कृति का बड़ा प्रभाव है। यह प्रभाव भाषा ,साहित्य ,संगीत, कला ,धर्म ,नैतिकता आदि में दिखाई पड़ता है।

हिंदी साहित्य में आदिकाल और भक्ति काल के साहित्य में भारतीय संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है, परंतु रीतिकाल और आधुनिक काल में पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव ने जोर पकड़ा है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण जहां साहित्य में औद्यो गकरण, व्यवसाय, जाति- प्रथा , शक्षा, सामाजिक जागृति, राजनीति, नारी स्वतंत्रता, नारी शक्षा, आत्मनिर्भरता, आ र्थक वकास के साधन ,संचार साधनों का वकास, भौतिकवादी संस्कृति का प्रचार -प्रसार, परंपरागत रूढ़िग्रस्त

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

भारतीय आदर्शों में सकारात्मक परिवर्तन कए हैं । बीसवीं सदी में साहित्य और समाज मे तथा भारतीय सोच पर पाश्चात्य सोच के सकारात्मक परिवर्तन भी दिखाई दिए हैं वही साहित्य और समाज में पाश्चात्य प्रभाव के नकारात्मक परिवर्तन ही नजर आए हैं।

आज भारतीय समाज खान-पान, रीति- रिवाज तथा अपनी अमूल्य धरोहर 'अपनी संस्कृति' को भूलता जा रहा है। हम पश्चिमी देशों के तौर -तरीके अपनाने की होड़ में इस तरह लगे हैं क अपनी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति मानी जाती थी। जब क हम पाश्चात्य संस्कृति को भौतिक प्रधान संस्कृति के रूप में देखते हैं। हमारी संस्कृति में वश्वास ,प्रेम -भावना ,सहानुभूति, आदर ,रीति-रिवाजों का अत्य धक महत्व रहा है । धर्म प्रधान संस्कृति होने के कारण इसे आध्यात्मिक संस्कृति कहा जाता है। साहित्यकार समाज में होते हुए इस परिवर्तन को अपनी लेखनी के माध्यम से अपने साहित्य में प्रस्तुत कर रहा है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण साहित्य और समाज दोनों प्रभा वत हुए हैं । वर्तमान में मनुष्य अपने देशी खानपान को छोड़कर बर्गर, पज़्ज़ा खाता है । खादी, सूती कपड़ों की जगह वह डेनिम, वुडलैंड,के ब्रांड पहनता है। लड़ कयां सूट - सलवार, साड़ी की जगह जींस- टॉप ,स्कर्ट आदि पाश्चात्य कपड़े पहन रही है। मनुष्य भौतिकतावादी युग में जी रहा है। पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के पीछे भागते -भागते वह इतना अंधा हो चुका है क अपने भारतीय खानपान ,अपनी वेशभूषा, रीति-रिवाजों को अपनाने में शर्म महसूस करता हैऔर जो लोग अपनी संस्कृति से जुड़े है उनको वे अनपढ़ ,गवार समझते है। वहीं दूसरी ओर जो लोग पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति को अपनाते हैं उन लोगों को पढ़ा- लखा तथा समझदार माना जाता है। लेखक साहित्य में इन सभी परिवर्तनों क महसूस कर रहा है।

समकालीन लेखक ज्ञान चतुर्वेदी ने अपने निबंध में फैशनप्रस्ती के वातावरण पर टिप्पणी करते हुए वर्तमान युवक-युवतियों द्वारा सर पर बाल रखने और कटवाने के सामान्य कार्यों में फैशन के प्रभाव पर लखा है- "ऐसा नहीं है क

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

पहले हेयर स्टाइल्स नहीं होती थी ,होती थी। पहले भी होती थी। पर वह बात नहीं जो आज होती है। तब लड़ कयां दो चोटियां रख लेती थी या फर लंबी सी एक। बहुत आधुनिक बताना हुआ तो धर लया जूड़ा । कहीं खोच लया गुलाब का फूल या डाल दिया गजरा। आज तो जितने हेयर स्टाइल है..... गनने मुश्किल। हर लड़की का नया हेयर स्टाइल।'**2**

19वीं-20वीं शताव्दी में पश्चिमी संस्कृति ने जिस प्रकार भारतीय संस्कृति पर प्रभाव डाला ,उसको देखकर अनेक साहित्यकारों ने साहित्य की प्रत्येक वधा में उसका चत्रण कया है। भारतेंदु ,जगमोहन संह, मै थलीशरण गुप्त ,श्रीधर पाठक ,महादेवी वर्मा ,जैनेंद्र ,प्रेमचंद ,अज्ञेय आदि अनेकों ऐसे नाम है ,जिनके साहित्य में हमें पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। मै थलीशरण गुप्त ने अपनी राष्ट्रीय रचना "भारत भारती" मे भारत के अतीत का गुणगान कया है । उन्होंने भारतीयों को बताया क हमारे देश की संस्कृति कतनी पुरानी है। भारतीय संस्कृति को दुनिया की सबसे पुरानी संस्कृति माना जाता है। उसी के साथ उन्होंने भारत-भारती मे वर्तमान और भ वष्य खंड का भी उल्लेख कया है। उन्होंने इस रचना में बताया है, क हम भारतीयों का अतीत कतना महान था और वर्तमान कैसा हो गया है। क्यों क हमने अपनी सभ्यता और संस्कृति को भुला दिया है। हमने दूसरे देशों की संस्कृति को अपना लया है। मै थलीशरण गुप्त लखते है -

"हम कौन थे क्या हो गए , जान लो इसका पता,
जो थे कभी गुरु, न अब शष्य की भी योग्यता,
जो थे सभी से अग्रगामी, आज पीछे भी नहीं
है दिखती संसार में , वपरीतता ऐसी कहीं।'**3**

सभ्यता संस्कृति का आरंभ वकास हमारे भारत देश से होने के कारण भारत को संसार का 'सरमौर' कहा जाता था। भारत के पूर्वज गुणी , धैर्यशाली ,बुराइयों से दूर, स्वच्छंद, धर्म-कर्म में निरत रहने वाले कहे गए हैं। भारतीय नागरिक अपनी संस्कृति की प्राचीनता और गौरव -गरिमा से मं डत रहे हैं।

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

वर्तमान में हम भारतीय अपनी संस्कृति (अपनी जड़ों) से कटते जा रहे हैं। यह चंता का वषय है।

संसार की सर्वोत्कृष्ट संस्कृति ,भारतीय संस्कृति है। वश्व में अनेक प्रकार की संस्कृतियों आई और लुप्त हो गई। भारतीय संस्कृति को वद्वानों ने 'देव संस्कृति' के समान माना है।

भारतीय संस्कृति पर प्र सद्ध महिला ले खका उषा प्रयंवदा ने अपने कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति का मलाजुला प्रस्तुत कया है। "चांद चलता रहा" कहानी मे रोहिणी के जीवन पर प्रकाश डाला है। रोहिणी अपनी शर्तों पर जिंदगी बसर करना चाहती थी । वह हर दिन नए पुरुष के साथ बिताती थी। जिज्ञासावश नहीं,,,,, आक्रोश और कुंठा के रूप में। कहानी मे वह अपने मत्र वनय से कहती है ---'मैं बड़ी हुई तो ताई ने मेरी शादी अर वंद से की। जो एक बड़े डॉक्टर थे। पढे- लखे, सूट -बूट ,उठने- बैठने का ढंग और एकदम प शचमी लाइफ स्टाइल ।जब मेरी शादी हुई तो मै खुशी से झूम उठी।"**4**

ले खका ने रोहणी के माध्यम से आधुनिक नारी के वचारो को दर्शाया है। 'ट्रिप'कहानी मे ले खका पाश्चात्य संस्कृति के अनुरूप अपना जीवन जीने वाली 'सोनी' की वचारधारा को प्रस्तुत करती है। हिन्दी साहित्य मे अनेक महिला ले खकाओ ने भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के बारे मे लखा है। भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हर रूप-रंग मे महसूस कया जा सकता है। भारतीय संस्कृति में रचे-बसे लोगों पर पश्चिमी सभ्यता का जादू सर चढ़कर बोल रहा है । सर्फ बोलचाल ही नहीं ,बल्कि पहनावे ,परंपरा ,रीति -रिवाजों को लेकर भी उनकी वचारधाराये बदल रही हैं।

अंत मे हम कह सकते है, क भारतीय संस्कृति साहित्य और समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। साहित्य मे पाश्चात्य प्रभाव बढ़ता जा रहा है। भारतीय संस्कृति जहा पूरे वश्व को अपनी और आक र्षत करती है वही हम अपनी संस्कृति से दूर जा रहे है।

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

हमे चाहिये क हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों क रक्षा करे। त्याग,सयम,सम्मान ,सत्य ,अहिसा ये सभी हमारी संस्कृति की पहचान है।हमे अपनी संस्कृति से अपनी आने वाली पीढ़ी को जोड़ना होगा । हमे अपनी संस्कृति पर गर्व था, पर हमारी युवा पीढ़ी का मोह पश्चमी संस्कृति की तरफ बढ़ता जा रहा है। युवा पीढ़ी का रहन सहन तो पूरी तरह से बदल ही चुका है ,अपने सद्धांतों और मूल्यों से भी दूरी बनानी शुरू कर दी है। वदेशो में हमारी संस्कृति को अपनाया जा रहा है पर हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे है।जो क भारतीय होने के नाते प्रत्येक नागरिक के लए चंतन का वषय है।

संदर्भ सूची:-

1. तोमर,राम बिहारी ,समाजशास्त्र की रूपरेखा,श्री राम मेहरा एंड कंपनी ,आगरा ,1976,पृष्ठ 336.
2. चतुर्वेदी ,ज्ञान ,जो घर फूंके, राजकमल प्रकाशन ,2012,दिल्ली ,पृष्ठ.49
3. गुप्त ,मैथलीशरण ,भारत भारती ,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली ,2016,पृष्ठ 27
4. उषा प्रयवदा -डॉ सुभाष पवार , वधा प्रकशन ,कानपुर प्रथम संस्करण,2010 ,पृष्ठ 22